International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(6): 174-176

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(6): 174-176
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-09-2022
Accepted: 29-10-2022

**डॉ. राजबीर**

संस्कृत-विभागाध्यक्ष, श्री माता मनसा देवी राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, पंचकूला, हरियाणा, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. राजबीर**

संस्कृत-विभागाध्यक्ष, श्री माता मनसा देवी राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, पंचकूला, हरियाणा, भारत

# विषय-ज्योतिष की उपयोगिता

## डॉ. राजबीर

**प्रस्तावना**

जन्म से मृत्यु पर्यन्त ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन के लिए प्रत्येक क्षेत्र में सहयोगी एवं कल्याणकारी है। उत्तम संतान प्राप्ति के लिये गर्भाधान काल का ज्ञान ज्योतिष द्वारा। किया जाता है, जो कि षोडश संस्कारों में प्रथम संस्कार है। उसके उपरान्त बालक के नाम का निर्धारण, अन्न प्राशन, विद्यारम्भ आदि मुहूतों का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही होता है। इसी प्रकार के समस्त कार्य कालाधीन है। ज्योतिष शास्त्र कालनियामक होने के कारण सर्वप्रथम काल निर्धारण में मानव मात्र के लिये सहायक व उपयोगी है। मानव जीवन में कर्म सिद्धान्त अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पूर्वजन्मार्जित कर्म का फल ही इस जन्म में भोगना होता है, और उसी के अनुरूप व्यक्ति का जन्म होता है। इसका विवेचन करते हुए कर्मविपाकसंहिता में वर्णन किया गया –

कर्मणा नरकं सूत स्वर्ग याति च कर्मणा ।
देवत्वं प्राप्नुयाज् जीवो राक्षसत्वं च कर्मणा ।।
कर्मणा बन्धमायाति मोक्षमायाति कर्मणा।
कर्मणा पतनोच्छ्रायौ नृणां जन्मनि जन्मनि।

पूर्व जन्म जन्मान्तरों में अर्जित कर्मों के फलस्वरूप व्यक्ति को स्वर्ग तुल्य सुखों की प्राप्ति अथवा नरक तुल्य कष्टों की प्राप्ति होती है। कर्म फल के आधार पर ही व्यक्ति देवत्व अथवा राक्षसत्व को प्राप्त करता है। कर्म फल के कारण ही व्यक्ति बन्धन और अथवा मोक्ष प्राप्त करता है। कर्म फल के कारण ही मनुष्य पतन या उन्नति को प्राप्त करता है। इन सिद्धान्तों से यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य अपने कर्मों के अधीन अपने भविष्य का निर्माण करता है। वैसे ज्योतिष शास्त्र व्यक्ति के जन्म से मृत्यु पर्यन्त सभी विषयों से व प्रत्येक क्षेत्र से जुडा हुआ है, किन्तु मुख्य रूप से मानव जीवन में निम्नलिखित विषयों में ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता परिलक्षित होती है। जैसे-

1. गर्भाधान काल के निर्धारण में
2. उत्तम संतति की प्राप्ति में

3. नामकरण, विद्यारम्भ, व्रतबन्ध, चूडाकर्म, विवाह आदि अनेक प्रमुख संस्कारों के मुहूर्त निर्धारण में
4. आयुष्य ज्ञान में
5. आजीविका निर्धारण में
6. रोग, दुर्घटना के ज्ञान में चिकित्सा में
7. यात्रा में. गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि
8. सम्बन्धी मुहूर्त विचारों में
9. पारिवारिक संबंधों के विचार में
10. मौसम, पर्यावरण कृषि, प्राकृतिक आपदा किसी राष्ट्र या प्रदेश की राजनैतिक, आर्थिक, सामरिक स्थिति के ज्ञान, समर्थ महर्प वृष्टि, शकुन आदि विचारों में
11. काल गणना व पञ्चाङ्ग निर्माण में।

इनके अतिरिक्त ज्योतिष एक सार्वभौमिक विज्ञान है, जो मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से प्रत्यक्षतया जुड़ा हुआ है,जन्म जन्मान्तरों में अर्जित कर्म के फल का निदर्शन ब्रह्माण्ड की स्थितियों के द्वारा ज्योतिष शास्त्र करता है ज्ञात-अज्ञात अवस्था में भी ब्रह्माण्ड निरन्तर हमें किसी न किसी रूप में प्रभावित करता रहता है। सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य ने आकाशीय स्थिति को देखकर ही काल की गणना का आरम्भ किया इसी कारण ज्योतिष शास्त्र का दूसरा नाम कालविधान शास्त्र भी है। काल का निरूपण आकाशीय ग्रह स्थितियों के द्वारा ही होता है, और उनमें भी सूर्य और चन्द्रमा सर्वप्रधान है। सामान्यतया आकाश में स्थित ग्रह, नक्षत्रादि पिण्डों की गति, स्थिति एवं उसके प्रभावादि निरूपण का अध्ययन हम जिस शास्त्र के अन्तर्गत करते हैं, उसे ज्योतिष शास्त्र कहा जाता है। भारतीय वैदिक सनातन परम्परा में ज्योतिष शास्त्र को सर्वविद्यामूलक वेद का अग होने के कारण 'वेदांग' कहा गया है। वेद के छः अंग हैं शिक्षा,कल्प,व्याकरण,निरुक्त,छन्द एवं ज्योतिष। इन्हीं वेदांगों को शास्त्र भी कहा जाता है। यह शास्त्र हमारे प्राचीन ऋषियों की देन है। इसके मुख्यतः तीन स्कन्ध है - सिद्धान्त, संहिता एवं होरा। इस शास्त्र का प्रथम उपदेश ब्रह्मा जी ने नारद को दिया था। कश्यप संहिता के अनुसार इसके सूर्य से लेकर शौनकादि पर्यन्त अष्टादश प्रवर्तक हुये है इसका इतिहास ब्रह्माण्डोत्पत्ति के साथ आरम्भ होकर उसके अवसान पर्यन्त अविच्छिन्न रूप से गतिमान हैं। मानव के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त यह शास्त्र उससे प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। मानव के व्यावहारिक जीवन में उसके प्रत्येक कार्य में ज्योतिष शास्त्र का योगदान स्पष्ट रूप से परिलक्षित है।

ज्योतिष - वेद के चक्षरूपी अंग को ऋषियों के द्वारा ज्योतिष शास्त्र की संज्ञा - प्रदान की गयी। सामान्यतया आकाश में स्थित ग्रह, नक्षत्रादि पिण्डों की गति, स्थिति एवं उसके प्रभावादि निरूपण का अध्ययन हम जिस शास्त्र के अन्तर्गत करते हैं, उसे शास्त्र कहा जाता है।

ग्रह - गच्छतीति ग्रहः । आकाशस्थ राशि मण्डल में वह पिण्ड जिसमें गति हो और जो नक्षत्रों के सापेक्ष चलायमान हो उसे ग्रह कहते है।

नक्षत्र - न क्षरतिति नक्षत्रम् । आकाशस्थ राशिमण्डलस्थ वह पिण्ड जो चलता नहीं नक्षत्र कहलाता है। दूसरे शब्दों में तारों के समूह की भी नक्षत्र संज्ञा है।

वेदांग- वेद के अंग को वेदांग कहा जाता है। भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परम्परा में बड़ वेदांग कहे गये है।

सिद्धान्त - त्रुटयादि से प्रलयकाल पर्यन्त की गई काल गणना जिस स्कन्ध में हो, उसे सिद्धान्त कहते है।

संहिता - ज्योतिष शास्त्र के जिस स्कन्ध में ग्रहचारवश ग्रह नक्षत्रादि बिम्बों के शुभाशुभ लक्षण से पशु-पक्षी कीटादियों का भूसापेक्ष सामूहिक विवेचन, आकाशीय घटनाओं का ज्ञान किया जाता हो, उसे संहिता शास्त्र कहते हैं।

होरा - जिस स्कन्ध में मानव मात्र का उसके जन्म सम्बन्धित काल के आधार पर ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति वशात् उसके जीवन सम्बन्धित शुभाशुभ फलों का विवेचन किया जाता है, उसे होरा कहते हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. लघुजातक मूललेखक वराहमिहिर टीकाकार - डॉ० कमलाकान्त पाण्डेय संस्करण 2005, प्रथम अध्याय - प्रकाशन चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी।
2. सिद्धान्तशिरोमणि मूललेखक आचार्य भास्कराचार्य, टीकाकार शर्मा, संस्करण 2011 प्रथम अध्याय प्रकाशन चौखम्भा संस्कृत भवन / चौखम्भा पं० सत्यदेव - साहित्य सीरिज, वाराणसी।
3. सिद्धान्ततत्वविवेक मूललेखक कमलाकर भट्ट, टीकाकार संस्करण 1996, प्रकाशक, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, चौखम्म संस्कृत भवन चौखम्भा साहित्य सीरिज, वाराणसी। - कृष्णचन्द्र द्विवेदी

4. सूर्यसिद्धान्त मध्यमाधिकार, लेखक प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय, 2002 चौख संस्कृतभवन / चौखम्भा साहित्य सीरिज, वाराणसी।